डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा के विचार

डॉ. आबी शादाब
प्रक्वता : शिक्षाशास्त्र
लोहिया महिला पी.जी. कॉलेज, कुचेरा, अयोध्या, उ.प्र.

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को मद्रास राज्य (वर्तमान तमिलनाडू) के दनुष कोटि ग्राम में हुआ। इनका पूरा नाम डॉ. अवुल पकीर जेनुलाब्दीन अब्दुल कलाम था। इनकी प्राम्भिक शिक्षा श्वाटर्प हाईस्कूल रोमन नाथ्पुरम में हुई। सन 1950 में बी. एस–सी. की परीक्षा सेंट जोसेफ कालेज तिरुचिरापल्ली से उत्तीर्ण की। सन 1955–57 में मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी से एयरोनाटिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की। 1958 में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहयक के रूप में डी.टी.पी. दिल्ली में नियुक्त हुए। इसी तरह अन्य महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए 25 जुलाई 2002 को राष्ट्रपति पद ग्रहण किया।

शिक्षा के विचार–

डॉ. कलाम ने शैक्षणिक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा : वास्तविकता और यथार्थ शिक्षा में साइन्स और नैतिकता का सामंजस्य होना चाहिए। उन्हें सच्चाई की उत्साहपूर्ण खोज को बढावा देना चाहिए जो मानवता इंसानियत तथा शांति की खोज करने वाली हो उसका परिपूर्णता और उच्च आदर्श देना चाहिए।

डॉ. कलाम का विचार है कि शिक्षा का अर्थ सिखाने और पड़ने के विशेष गुण और कुछ कम वास्तविक परन्तु बहुत महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विवेक और समझदारी इन सबसे बढकर शिक्षा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कृति का बोध कराती है। "डॉ.कलाम शिक्षा के उद्देयों की व्याख्या करते हुए कहते हैं की शिक्षा का उद्देश्य युवाओं को कुछ इस प्रकार से डालना है कि वे आजीवन स्वतंत्र शिक्षार्थी बने रहे।[1]"

डॉ. कलाम का कहना है कि यहाँ समस्या इस बात को लेकर शुरू होती है कि लोग सोचते है कि शिक्षा का उद्देश्य सरकारी नौकरी पाना है जबकि हमें यह समझना चाहिए कि इसका उद्देश्य व्यक्ति विशेष को आर्थिक दृष्टि से एक आरामदायक जीवन प्रदान करना है, डॉ. कलाम साहब का कहना है कि मेरे विचारों से शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति विशेष में छिपी उसकी सृजनात्मकता को बाहर निकलना एवं उसको निखारना है। इसे वे अपनी एक कविता स्पष्ट करते हैं : "जब बंदूकें हो जाती मौन पुष्प खिलते धरती पर होती शोभित पवित्र आत्माएं जिन्होंने रचा यह सुंदर मौन[2]"।

डॉ. कलाम साहब का मत है कि सर्वप्रथम शिक्षा–प्रणाली को उद्धयोग घघी के महत्व पर बल देना होंगा। मिसाइलो के जनक राट्रपति डॉ. कलाम का कहना है की संभवतः शिक्षा सेवा कह कहना है की सम्भवता शिक्षा क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। शक्षा लोगों को दक्षता तथा किसी भी कार्य हेतु आवश्यक ज्ञान प्रदान करती है।

डॉ. कलाम ने अपनी पुस्तक महाशक्ति भारत में शिक्षा पद्धति के बारे में कहा है 'पिछली शताब्दी में दुनिया में एक महान बदलाब आया कृषि आधारित समाज जिसमे प्राकृतिक श्रम महवपूर्ण था उन्होंने कहा 1950 से आई. आई. टी. ने विश्व के कुछ प्रमुख इंजीनियययो को बनया

आज उनमे से अधिकांश विश्व एव भारत की प्रसिध्द कम्पनियों के प्रमख है ये संस्थाए भारती की उच्च शिक्षा व्यवस्था की उपब्धियो की सफलता की साक्षी है।

डॉ. कलाम ने पाठ्यक्रम पर चर्चा करते हुए कहा की : हमारा प्राचीन ज्ञान एक अनूठा संसाधन है क्योकि उसमे लगभग पांच हजार वर्षो की सभ्यता का भंडार है द्य डॉव कलाम का मानना है की हमे नैतिक व्यवस्था वाली एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो विज्ञानं कलां विधि साहित्य तथा राजनितिक आदि विभिन्न क्षेत्रो में अग्रणी रहे हमारे महान नेताओ के अनुभव व्यखान करती हो डॉ. कलाम साहब ने स्पष्ट किया की प्रारंभिक उच्च शिक्षा प्रायः लिपि किय नौकरियों के लिए प्रोत्सहित करती है उन्होंने कहा की स्कूलो को चलने के लिए आवश्यक स्कूल सुविधाए आधारभूत डचे और आचे शिक्षको की नियुक्ति हेतु तत्काल कदम उठाने की आवश्कता है , डॉ. कलाम के अनुसार किसी भी व्यक्ति के जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बीतता है जब वह पांच से पन्द्रह वर्ष की अवस्था में अध्ययन कर रहा होता है।

स्कूल के लिए डॉ. कलाम ने कहा "मेरा ऐसा सपना है की सन 2020 के स्कूल इमारते न होकर एक ऐसा क्रेंद्र होंगे जिसमें विश्व भर का ज्ञान शिक्षक विद्याथियों और समाज को आपस में बाँधेगा और सभी के लिए उपलब्ध होगा किसी प्रकार की सीमाएं इसमें बाधा नहीं बनेगी उन्होंने कहा की : हम भाग्यशाली है की हमारे पास कुछ उत्तम विद्यालय तथा प्रोफेशनल संस्थान जैसे इडियन इंस्टीट्युट आफ़ साइंस, इंडियन इंस्टीट्युट आफ़ टेक्नोलाजी और इन्दिरा स्कूल आफ़ मैनेजमेंट है। डॉ. कलाम ने कहा– शिक्षक एक सीढी के समान है जिस पर चढ़ कर उसके विद्यार्थी उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ जाते है और सीढी वहीं खड़ी रह जाती आने वाले विद्याथियों के लिए उन्होंने कहा की शिक्षकों पर उत्तरदायित्व बहुत है। वास्तव में वही सच्चा शिक्षक है जो किसी व्यक्ति की एक आदर्श नागरिक बनाए। एक यूनानी शिक्षक की उक्ति है की आप मुझे अपना बच्चा सात वर्षो के लिए दे फिर देखे उसे न तो कोई शैतान बदल सकता है और न ही ईश्वर। डॉ. कलाम ने कहा की अध्यापक को चाहिए की वह अपने छात्रों को हमेशा के लिए एक स्वतंत्र शिक्षार्थी में बदल दें। डॉ. कलाम ने अपनी पुस्तक "हम होंगे कामयाब" में लिखा है अध्यापन के लिए तो मै सदैव तैयार रहता हूँ क्योकि इसमें मुझे जिज्ञासु युवाओं के साथ रहने का अवसर प्राप्त होता है। एक अच्छे शिक्षक की व्याख्या करते हुए डॉ. कलाम ने कहा– परिवार और विद्यालय काफी हद तक प्रेरणा का स्त्रोत होते हैं। अध्यापक एक एसा व्यक्तित्व है जो हमें जागरूक बनता है हमें प्रयत्नशील रखता है तथा हमारी रुचियों को दिशा देता है।

इमाम अल गज्जली ने कहा है– एक समर्पित अध्यापक उस दीपक की तरह होता है जो दूसरों को रोशनी देने के लिए स्वयं जल जाता है[4]।

डा. कलाम ने कहा आशा और मुल्य आधारित शिक्षण में विश्वास करने वाले प्राथमिक माध्यमिक और कॉलेज शिक्षा के मेरे शिक्षकों ने मुझे कई दशक आगे के लिए तैयार कर दिया[5]।

डा. कलाम तथा बच्चों के बीच आपसी प्रेम बहुत प्रसिद्ध है, वह उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करते है। छोटा लक्ष्य एक अपराध है यह उनका पसंदीदा वाक्य है। उनका मानना है कि प्राइमरी स्तर पर शिक्षा बच्चों के अपने परिवेश के रुचि जगाए। केवल बच्चों के साथ होने का एहसास उन्हें ऊर्जा से भर देता है। उनकी ओर देखना ही बच्चों को प्रोत्साहित कर देता है। यह स्वतन्त्र भारत के इतिहास में अतुलनीय है। केवल जवाहर लाल नेहरू बच्चों के साथ बहुत

अच्छा तालमेल स्थापित कर पाते थे उसी प्रकार "चाचा कलाम" भारतीय बच्चों के हृदय में अंकित है। डा. कलाम ने कहा इक्कीसवी सदी में हमें – शिक्षा, स्कूल, शिक्षा, स्कूल, पाठ्यक्रम, शिक्षक और विद्यार्थी को दोबारा से परिभाषित करना पड़ेगा, उन्होने बच्चों से कहा – सपने लेना मत छोड़िये सपने लेते रहिए। द्य सपनेही आधार शिला होते हैं[6]। डा० कलाम शिक्षा सवंत्त्रता उत्कृष्ट योद्धा के रूप में उन लोगों में से है जो बालक की शिक्षा के लिए आजादी की हिमायत करते है। डा0 कलाम भी गाँधी जी के भाँति दमनात्मक अनुशासन या शारीरिक दण्ड के रूप में अनुशासन के विरोधी है। डा. कलाम साहब कहते हैं कि जब बालक अपने सौंपे हुए काम में व्यस्त हो इस समय शिक्षक को जागृत रहकर उनका काम देखते रहना चाहिए उनका पथ प्रदर्शन करना चाहिए तथा जब मूल्याकन का की बारी आये तब बच्चों द्वारा त्रुटियों की चर्चा करनी चाहिए।

सन्दर्भ–

1) हम होंवे कामयाब पुस्तक से डॉ. अब्दुल कलाम – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
5) नार्मन पिसेंट पिएले की पुस्तक –भाई कोटेशल से उद्धृत से।
3) डॉ. ए.पी.जे. कलाम–राष्ट्र गौरव–शर्मा महेश डायमन्ड, बुक्सनई दिल्ली।
4) फासिस नबीह अमीन (अनुवादक) अल गजनी (आर.ए.) की द बुक आफ नालिल शीर्षक पुस्तक, इरराइशाअत एव दिनियत–2005
5) प्रथम कंप्यूटर लिटरेसी ए अक्सेलेंस आवार्ड फॉर स्कूल पर अभिभाषण, नई दिल्ली–29–8–2002
6) विजयी भव– तिवारी कुमार अरुण, ए.पी.जे. कलाम, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली